Edit with WPS Office

मॉडल प्रश्न पत्र

कक्षा -9 हिंदी

_प्रश्नों में से सही विकल्प चुनिए : 1×5 = 5

(1)तुलसीदास की भक्ति किस प्रकार की है ?

(१)साख्यभाव दास (२) दास्य भाव (३)माधुर्य भाव (४) प्रेम भाव

उत्तर : (२) दास्य भाव

(2)चातक क्या है ?

(१)पक्षी (२)कीड़ा(३) जानवर(४) सरीसृप

उत्तर : (१) पक्षी

(3) विहंग कहां वास करता है?

(१) तरु की फुनगी पर(२) तरु की जड़ में (३) तरु के कोटर में (४)इनमें से कहीं नहीं

Edit with WPS Office

उत्तर : (३) तरु के कोटर में

(4)धूम्र समूह से चातकके किस अंग की क्षति होती है ?

(१)पंख की (२) चंचु की (३) लोचन की (४) पद की

उत्तर : (३) लोचन की

(5)बाज को मूर्ख क्यों कहा गया है ?

(१)उसके लोभ के कारण (२)उसके भक्ति के कारण (३)उसकी मूर्खता के कारण (४)उसके अज्ञान के कारण

उत्तर : उसके अज्ञान के कारण

■ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1×5 = 5

(1) तुलसीदास किस अग्नि में नहीं दहकना चाहते हैं ?

उत्तर :तुलसीदास किसी की कठोर वाणी की अग्नि में स्वयं नहीं दहकनाचाहते हैं ।

Edit with WPS Office

(२)कामधेनु का चित्र बनाने मात्र से क्या विपत्ति कट जाएगी ?

उत्तर :कामधेनु का चित्र बनाने मात्र से विपत्ति नहीं कटेगी बल्कि कर्तव्य करने से विपत्ति कटेगी ।

(3)विनय के पद कवि की किस मूल रचना से लिया गया है?

उत्तर : 'विनय के पद' कवि तुलसीदास की मूल रचना 'विनय पत्रिका 'से लिया गया है ।

(4)बल्मीकि में रहने वाले सर्प प्रहार से क्यों नहीं मरता है ?

उत्तर :बल्मीकि में रहने वाले सर्प प्रहार से इसलिए नहीं मरता है क्योंकि लाठी की मार वहां तक नहीं पहुंच पाती है अगर उसे मारना है तो हमें कोई अन्य उपाय करने होंगे जो अंतर तक जाए।

(5) संसार -सागर को कैसे पार किया जा सकता है ?

उत्तर :कवि तुलसीदास के अनुसार संसार सागर को

Edit with WPS Office

पार करने के लिए आत्मज्ञान का होना जरूरी है जो कि गुरु के बिना संभव नहीं है अर्थात गुरु की कृपा एवं ज्ञान प्रकाश अर्थात आत्म ज्ञान से ही संसार रूपी अनंत सागर है उसे पार किया जा सकता है।

■◆ व्याख्या मूलक प्रश्न :- 3×2 = 6

"ऐसी मुड़ता या मन की, पर हरि राम भक्ति सुर-सरिता आस करत ओस कन की "

(क) पाठ और रचयिता का उल्लेख:

प्रस्तुत पंक्ति प्रस्तुत पंक्ति पाठ विनय के पद से ली गई है जिसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

(ख) पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करें:-

पंक्ति में कवि तुलसीदास जी कहते हैं कि मन मेरा मन कितना मूर्ख है जो श्री राम की भक्ति रूपी गंगा को त्याग कर सांसारिक सुखों जिसकी तुलना कभी ने उसकी बूंदों से की है उसे अपनी प्यास बुझाना चाहता है। कवि आश्रम को मूर्ख बताते हुए कहते हैं कि वह

Edit with WPS Office

सांसारिक भ्रम में डूब गए है। और ऐसी स्थिति से वह भगवान की कृपा के द्वारा ही बाहर निकल सकते हैं।

(2) श्री रघुनाथ कृपालु कृपा ते संत स्वभाव गहौंगो

जथालाभ संतोष सदा, काहू सो कछु ना चहौंगो

(1) संतों का स्वभाव क्या है ?

जथालाभ संतोष करना अर्थात किसी से कोई उपेक्षा नाक नहीं करना ।परोपकार के लिए सदैव तत्पर रहना और क्रोध ना करना शत्रुता एवं मन कर्म और वचन से विधि निषेध के नियमों का पालन करना ही संतों का स्वभाव होता है।

(2) इस अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : प्रस्तुत अंत में कवि तुलसीदास ने संत के स्वभाव की विशेषताओं का उल्लेख किया है ।कवि ने कहा है कि मैं कृपालु श्री राम की कृपा से संतो के स्वभाव को ग्रहण कर लूंगा मुझे जितना लाभ प्राप्त होगा ।उतने से ही संतोष कर लूंगा मैं किसी से किसी

Edit with WPS Office

चीज की याचना नहीं करूंगा ।मैं निरंतर परोपकार के कार्य में तल्लीन रहूंगा। मैं मन वचन और कर्म से इस नियम का निर्वाह करूंगा।

■निम्नलिखित में से किन्ही एक प्रश्न का उत्तर दीजिए: 7×2 = 14

(1)तुलसीदास के अनुसार साधु का स्वभाव कैसा होना चाहिए पठित पाठ के आधार पर स्पष्ट करें:

कवि तुलसीदास स्वयं किस प्रकार का स्वभाव अपनाना चाहते हैं पाठ के आधार पर बताएं

उत्तर : कवि तुलसीदास प्रस्तुत पाठ में राम से अपने आराध्य राम के प्रति विनय का भाव प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु मैं कब तक साधु का स्वभाव धारण करूंगा ?कब तक मैं इस पुराने स्वभाव में जीता रहूंगा ?तुलसीदास को लगता है कि श्री राम के कृपा के बिना भी संतों का स्वभाव धारण नहीं कर सकते हैं। वे कहते हैं कि संत इनका स्वभाव है कि

Edit with WPS Office

उन्हें जितना लाभ मिले उसी में संतोष कर लेना। वे अपने स्वभाव पुराने स्वभाव जिसमें असंतोष की प्रवृत्ति है उसे पूरी तरीके से त्याग त्याग देना चाहते हैं वे चाहते हैं कि वह वैसा स्वभाव धारण करें जिसमें उन्हें किसी भी चीज के प्रति याचना करने की आवश्यकता नहीं हो। वह दूसरे के आप परोपकार के कार्य में स्वयं को तल्लीन रखना चाहते हैं और मन वचन और कर्म तीनों ही स्थितियों से अपने जीवन का निर्वाह करना चाहते हैं ।साथ ही वह चाहते हैं कि किसी के द्वारा सुनाए गए कठोर वचन से उन्हें कोई तकलीफ ना हो और वह उन्हें सुनकर स्वयं को क्रोध की अग्नि में नहीं जलाएं। इसके साथ ही वह अपने संपूर्ण जीवन को मान और अब मान के भाव से दूर रखना चाहते हैं ।इन सब गुणों को कवि तुलसीदास ने संत स्वभाव कहां है। वह यह भी कहते हैं कि मैं कब कब तक मैं अपने मन के चारों दिशाओं को शांत रखूंगा और सदैव दूसरों के अंदर दूसरा देखकर केवल उनके गुणों का उल्लेख करूंगा ।वह साथ ही अपने

Edit with WPS Office

दलित चिंताओं को दूर कर केवल दूसरों के सुख दुख को अपने जीवन में आने वाले सुख दुख को सामान विवेक के साथ सहन करने की इच्छा जाहिर करते हैं। इसी स्थिति में वह प्रभु राम से या अपने आराध्य भगवान राम से निवेदन करते हैं कि हे प्रभु! मैं कब तक इस स्थितियों का पालन कर सकूंगा और कब आपकी भक्ति को प्राप्त कर सकूंगा और उन्हें लगता है कि बिना भगवान की कृपा के अभाव को ग्रहण नहीं कर सकते हैं इसलिए वह अपने आराध्य से निवेदन करते हैं।

(2) तुलसी के अनुसार उनका मन किस प्रकार मूर्ख है और वह मुंह बंधन से क्यों नहीं छूट रहा है पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर :कवि तुलसीदास स्वयं को मूर्ख कहते हैं वह कहते हैं कि भगवान राम रूपी भगवान राम की भक्ति रूपी सुर सरिता अर्थात नदी को छोड़कर वह उसकी

Edit with WPS Office

बूंदों से अपनी प्यास बुझाने की इच्छा जाहिर कर रहे हैं अर्थात उनका मन मूर्ख है ।ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार चातक पक्षी धोने के समूह को बादल समझ कर अपनी प्यास बुझाने पहुंच जाता है ।लेकिन अंततः उसे उसके लोचन की क्षति होती है। उसी प्रकार कवि तुलसीदास भी अपने जीवन की क्षति किए जा रहे हैं ।कभी कहते हैं कि भगवान राम की कृपा के बिना वह उनका दुख कष्ट नष्ट नहीं हो सकता है और भगवान की कृपा पाकर यह वही संसार एक बंधन से अपने आप को छुड़ा सकते हैं। तुलसीदास कहते हैं कि वह इस बंधन सांसारिक बंधन से बचने के लिए स्वयं करोड़ो उपाय कर चुके हैं लेकिन यह अंदर की गांठ यानी आंतरिक किया आत्मज्ञान नहीं हो पाने के कारण यह बंधन छूट नहीं रहा है ।ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार पेड़ के गड्ढे में छुपे हुए सांप को अगर मारा जाए तो केवल बाहरी प्रहार से मर नहीं मर सकता है ।उसे मारने के लिए अंतर थम उपाय करने होंगे ।कवि तुलसीदास जी कहते हैं कि इस

Edit with WPS Office

बंधन से छूटने के लिए उन्हें आत्मज्ञान यानी अभियंता ग्रंथि का छूटे ना जरूरी है और यह अभ्यंतर ग्रंथि भगवान की कृपा के बिना संभव नहीं है तुलसीदास का मानना है कि गुरु की कृपा के बिना यानी अपने आराध्य की कृपा के बिना उनका मन जो है वह किसी भी तरीके से पवित्र नहीं हो सकता है और पवित्र ज्ञान के बिना वह इस संसार रूपी जो सागर है उसे पार नहीं कर सकते हैं। वह अपने आराध्य से निवेदन करते हैं कि उन्हें उनकी कृपा उन्हें प्राप्त हो और इस कृपा के द्वारा वह इस सांसारिक सागर को भवसागर को पार कर सकें।

Edit with WPS Office